“Glory“
“महिमा”

Phil 2:3-11

March 27, 2016

Theme: We develop a mindset of living for God’s glory by understanding the glory revealed in Christ.
हम प्रभु येशु में ईश्वर की महिमा देखकर, जीवन जीने का प्रयत्न करते है

1. The Glory of the Cradle
   पालने की महिमा

    a. The Glory Described (v.5-7)
       महिमा का वर्णन

        i. Christ was in the “form” of God (v.6)
           येशु परमेश्वर के रूप में थे

        ii. Christ came in the “form of man (v.7)
           येशु मनुष्य के रूप में थे

    b. The Glory Applied महिमा का आवेदन किया है
       Consider… विचार कीजिए
        i. Your Motive (v.3a)
           तुम्हारी प्रेरणा

        ii. Others Significance (v.3b)
           दूसरों की महत्ता

        iii. Other’s Interest
           दूसरों की रूचि

2. The Glory of the Cross क्रूस की महिमा

    a. The Glory Described
       महिमा का वर्णन

        i. Perfect obedience (v.8a)
           उत्तम आज्ञाकारिता

ii. Perfect Sacrifice (v.8b)
उत्तम बलिदान

Why did God require a sacrifice?
परमेश्वर को बलिदान की क्या ज़रूरियात थी ?

1. To satisfy his justice
   उनका का न्यायि संतुष्ट करने के लिए
2. To express his love
   उनका का प्यार अभिव्यक्त करने के लिए

b. The Glory Applied: Sacrifice for others reflect Jesus
महिमा का आवेदन : दूसरों के लिए बलिदान प्रभु येशु को प्रतिबिंबित करता है

3. The Glory of the Crown मुकुट की महिमा

v.9 "God has highly exalted Him" What does exaltation reference?
"परमेश्वर ने उनको ऊँचा किया है " ऊँचा करने का संदर्भ क्यों किया गया है ?

1. Christ's resurrection (v.9a)
   येशु ख्रीस्त का पुनरुथान
2. Christ's Honor (v.9b)
   येशु ख्रीस्त का आदर सामान
3. Christ's Authority (v. 10-11)
   येशु ख्रीस्त का अधिकार

Conclusion: We should trust him who made his glory known by being broken for us.
निष्कर्ष : हमे येशु पर भरोसा करना चाहिए क्यूंकि वह अपनी महिमा खंडित हो के प्रतिबिंबित करते है